मिशन शिक्षण संवाद

शैक्षिक गीतों का संग्रह

गीतांजलि सृजन

अंक - 16

#9458278429

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन टीम

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

दिनांक - 17-12-2023

दिन - रविवार

399

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं....

गीत- पढ़ो मेरे बच्चों होगे सफल

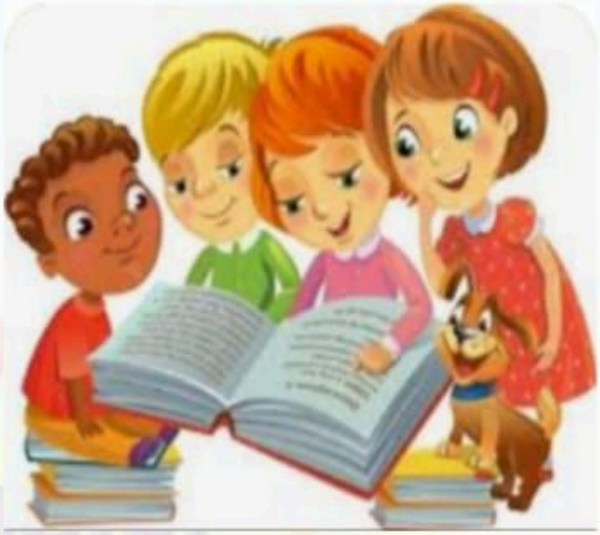

पढ़ो मेरे बच्चों होगे सफल,
आगे बढ़ोगे-2 सुधर जाये कल।।
पढ़ो मेरे बच्चों होगे सफल।।

निपुण लक्ष्य को प्राप्त करना तुम्हें है,
पढ़ायेंगे हम और पढ़ना तुम्हें है।
भरो मन में आलस न-2, हो जैसे जल,
पढ़ो मेरे बच्चों होगे सफल।।

जीवन तुम्हारा सुखद होगा हर पल,
आयेंगी खुशियाँ ज्यों सरिता बहे कल।
लहो ज्ञान उर में-2, बहें मन के मल,
पढ़ो मेरे बच्चों होगे सफल।।

यही सीख मेरी, यही कामना है,
बनो पढ़के कुछ तुम, ये मानना है।
पकड़ोगे आलस तो-2, बिगड़ेगा कल,
पढ़ो मेरे बच्चों होगे सफल।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी (कम्पोजिट)
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

दिनांक -24/12/2024

दिन -रविवार

400

गीत- खुश्बू वतन की फिजाओं में बिखरे

तर्ज़- तुम्हें अपना साथी बनाने से पहले.....

खुश्बू वतन की फिजाओं में बिखरे,
सुवासित सा हर बागबां हो रहा है।
खैरियत हर जगह हर अजीजे दिलों पर,
हमको हमारा वतन भा रहा है।।

करवट बदलते गए वक्त सारे,
बीते जो इतिहास में हैं समाए।
रुससवाइयों संग मिली हैं जो खुशियाँ,
उनको सहेजें, उनको सजाएँ।।
वतन के लिए सब बनें हम खिताबी,
तरक्की लिए दौर कह जा रहा है।
खुश्बू वतन की.....

छोड़ो न दामन उम्मीदे कभी भी,
राहों में कांटे सजे से मिलेंगे।
नायाब होगे तुम्हीं एक दिन तो,
उस दिन तुम्हें तो फरिश्ते मिलेंगे।।
बहारे-चमन की अकीदत में देखो,
चढ़ा रंग चढ़ता ही अब जा रहा है।
खुश्बू वतन की.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

401

दिनांक - 31-12-2023

दिन - रविवार

तर्ज- शुरू हो रही है प्रेम कहानी

गीत- जाड़े की ऋतु ये आयी सुहानी

जाड़े की ऋतु ये आयी सुहानी।
ठण्ड बढ़ी है, शीत नयी है, ये मनमानी।।
जाड़े की ऋतु ये..

फीकी रवि की धूप पड़ी है,
सुबह-शाम को दुःख की घडी है।
रहें सँभलकर, इस पल हम सब,
मैंने है जानी।।
जाड़े की ऋतु ये...

स्वेटर, मोजा, जूते पहनो,
कान बन्द रखो भैया-बहनो।
करो स्वयं की देखभाल तुम,
कहूँ मैं कहानी।।
जाड़े की ऋतु ये..

दिन में धूप में खेलो, बैठो,
बात बड़ों की मानो, न ऐंठो।
शाम को घर से न निकलो तुम,
ये सबकी जुबानी।।
जाड़े की ऋतु ये...

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी (कम्पोजिट)
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

402

दिनांक - 07/01/2024

दिन - रविवार

तर्ज़- कोठे ऊपर कोठरी.....

गीत- बेटी हूँ तो क्या हुआ.....

बेटी हूँ तो क्या हुआ,
मैं सब करके दिखला दूँगी।
गाँव-गाँव और गली-गली में,
मैं परचम लहरा दूँगी।
वैसे मेरा चेहरा भोला,
हाँ, है चेहरा भोला।
गगन में प्लेन उड़ा दूँगी।।

मम्मी-पापा मुझको पढ़ाओ,
अभी ब्याह न कराओ तुम।
डॉक्टर, टीचर, पायलट क्या,
डी०एम० बनके दिखला दूँगी।।

मैं हूँ बेटी हुनर वाली,
सब बेटों को समझा दो जी।
आई जो मैं ज़िद पर अपने,
नभ में यान उड़ा दूँगी।।

सुनकर मेरी शक्ति कहानी,
जो भी मुझसे पंगा लेगा।
बनकर मैं पुलिस में अफसर,
उसको भी मजा चखा दूँगी।।

रचना-

रुखसाना बानो (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अहरौरा
जमालपुर, मीरजापुर

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

दिनांक - 14/01/2024

दिन - रविवार

403

गीत- राम जी का सजने लगा दरबार है

तर्ज- साजन मेरा उस पर है

राम जी का सजने लगा दरबार है,
प्रभु ने दिया सबको ये उपहार है।..2

अयोध्या में प्रभु का जब मन्दिर बन जाएगा,
कण-कण सृष्टि का तब तर जाएगा।
सबको शुभ घड़ी का इन्तजार है,
बनने वाला राम जी का दरबार है।।

राम जी का सजने लगा दरबार है,
प्रभु ने सबको दिया....2

राम जी के दर्शन सबको हो जाएँगे,
जन्मों-जन्मों के कष्ट मिट जाएँगे।
करेंगे वो सबका उद्धार है,
राम जी से सारा ये संसार है।।

राम जी का सजने लगा दरबार है,
प्रभु ने दिया सबको ये उपहार है।...2

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन

404

दिनांक - 21-01-2024

दिन - रविवार

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं....

गीत- मेरे राम श्रीराम-2, करिये श्रवन

मेरे राम, श्रीराम-2, करिये श्रवण।
सुनो मेरी विनती, है दुःख गहन।।

1- मुझे घेर लीन्हा, विपदाओं ने है,
बड़ा क्रोध, भय, रुज, सुबिधाओं ने है।
तन में भरा आलस-2, कीजे जतन,
सुनो मेरी विनती, है दुःख गहन।।

2- विपदाओं ने ऐसा कीन्हा बसेरा,
लगीं आफतें जैसे छाया का घेरा।
हटा दो इन्हें प्रभुजी-2, हो, निर्मल सदन,
सुनो मेरी विनती, है दुःख गहन।।

3- किसे मैं सुनाऊँ, ये पीड़ा हृदय की,
जपूँ नाम हरि, पकड़ूँ, राहें अभय की।
मिले मुझको मुक्ती-2, रहे खुश वतन,
सुनो मेरी विनती, है दुःख गहन।।
सुनो मेरी विनती, है दुःख गहन।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
ब्लॉक- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन

दिनांक - 28/01/2024

दिन - रविवार

405

गीत- हिलाय देत बा भइया सबके ई ठण्डी.....

तर्ज़- लोकगीत

हिलाय देत बा भइया सबके ई ठण्डी,
गउआँ, देहतिया या हो बजार, मण्डी।
हिलाय देत बा.......................

बड़ा कड़ाका जाड़ा पड़त हौ,
हथवा औ गोड़वा दूनो गलत हौ।
पहिरे रहा केतनो बूट, स्वेटर, गंजी,
हिलाय देत बा.....................

जाड़ा से बचऽ के ना सबके ठेकान बा,
कउड़ा ही सबकर बचवले ही जान बा।
एक साथ बइठी के ले अलाव जर्दी,
हिलाय देत बा......................

जाड़ा में चले ना केहू के अभिमान हो।
गलन कऽ रुख कइले सबके परेशान हो।
हर काम रुकल नाहीं होत बाटे जल्दी,
हिलाय देत बा......................

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

दिनांक - रविवार

406

दिन -04/02/2024

आ जाओ धरा पर एक बार

रोम-रोम तुम्हें पुकारे हे ! राम,
आ जाओ धरा पर एक बार।
नारायण से नर का रूप बनाकर,
करो हम सबका उद्धार।।
त्राहि-त्राहि कर रहा सकल भुवन,
मंझधार बीच में अटकी नैया,
नहीं है कोई खेवनहार।
आ जाओ धरा पर एक बार।।

अम्बा जिनकी कौशल्या,
रघुवंशी दशरथ जनक कहलाए।
पालन कर आदर्शों का,
मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाए।।
तुम हो आदि-अन्त वीर शिरोमणि,
सब के पालनहार।
आ जाओ धरा पर एक बार।।

पवित्र किया इस भारत भूमि को,
लेकर जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को।
धन्य किया सब जनमानस को,
उल्लसित हो गए सब दिग-दिगन्त।।
पतित पावन सियापति सूर्यवंशी।
कर दो भव से सबको पार।।
आ जाओ धरा पर एक बार।

रोम-रोम तुम्हें पुकारे हे! राम,
आ जाओ धरा पर एक बार।।

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन

दिनांक - 11-02-2024 दिन - रविवार 407

तर्ज- जीना है तो हँसके जियो
गीत- भजना है तो हरि को भजो

भजना है तो हरि को भजो,
जीवन में फिर दुःख होगा न।
हरि का भजन है श्रेष्ठ, शुभ,
कटें पाप फिर सुख होगा हाँ।।
भजना है तो.....होगा न।

होता दुःखी है क्यों उर में तू,
पीड़ा हरेंगे हरी भजले तू।
सारे अभावों का जंजाल फिर,
हो दूर होगा सुखी सुन ले तू।।
श्रीराम का नाम पावन परम,
बिना हरि के कुछ काम होगा न ।।
भजना है तो.....होगा न।।

सारी मनोकामना पूरी हों,
श्रीराम बिन रहें अधूरी हों।
रख धैर्य धर ध्यान ईश्वर का तू,
बरसेगा आनन्द सुखी होगा तू।।
हरि यश सुनो, नाम जप कीजिए,
हरि नाम बिन पार होगा न।।
भजना है तो.....होगा न।।

मेहनत करो आगे बढ़ना सुपथ,
सफल होगा कर ध्यान ये ऐसा रथ।
इस पर अगर बैठ जायेगा तू,
भव-भय व दुःखों से तर जाये तू।।
करो कर्म पूजा व सहयोग तुम,
समभाव रख, सोच होगा न।।
भजना है तो.....होगा न।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
ब्लॉक- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

408

दिनांक - 18/02/2024

दिन - रविवार

पुरानी पेंशन

माँगते हो क्यूँ ये तो अधिकार हमारा है,
सुन लो मेरी बहनों और सुन लो मेरे भाइयों।
एन पी एस लेकर नहीं बनना बेचारा है।।
सुन लो मेरी.....

छोटे छोटे बच्चों को हम क्या सिखाएंगे,
अपना खुद का हक़ भी जब ना ले पाएंगे।
कैसे लेते हैं हक ये सबको दिखाना है।।
सुन लो मेरी.....

सरकारें तो बस अपनी गूंगी, बहरी और मौन हैं,
इनको अब बतलाना होगा आखिर हम कौन हैं।
हथियार वोटों का अपनी अब आजमाना है।।
सुन लो मेरी.....

पेंशन ही तो अपने जीवन का आधार है,
बिन इसके तो दूर हो जाता परिवार है।
बुढ़ापे की लाठी को मजबूत बनाना है।।
सुन लो मेरी.....

गर अपनी इस बात को सरकार अब ना माने,
तख्तों ताज पलट देंगे आओ मिलकर ठानें।
वापस फिर से अपना सम्मान पाना है।।
सुन लो मेरी.....

रचना- पारुल चौधरी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० हरचंदपुर (1-8)
खेकड़ा, बागपत

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन

दिनांक - 25.02.2024

दिन - रविवार

409

गीत- ये शिक्षा ही जीवन है...

तर्ज- सूरज कब दूर किरन से...

हो हो ओ ओ हो हो ओ ओ...
हो हो ओ ओ हो हो ओ ओ...
हो ओ हो ओ हो ओ हो ओ...

ये शिक्षा तो सभी का धन है...
ये शिक्षा ही जीवन है....
ये शिक्षा तो सभी का धन है...
ये शिक्षा ही जीवन है....

विद्या के मन्दिर की हो,
बच्चों तुम प्यारी मूरत....2
हर ज्ञान यहाँ मिलता है,
तुमको विद्या की ज़रूरत...

तुम ही भविष्य भारत का...
तुम देश के भाग्य-विधाता...
तुम पर है जिम्मेदारी....
तुम जोड़ों ज्ञान से नाता...

ये शिक्षा तो सभी का धन है...2
ये शिक्षा ही जीवन है...2

जीवन की राहों में तुम...
पग-पग खुशियाँ बिखराना...
है ज्ञान ही सच्ची पूँजी...
इससे जीवन महकाना...

जब-जब हो कोई मुश्किल..
या कोई बाधा आए...
बस कागज, कलम, किताबें...
इनके संग ही सब जाएँ

ये शिक्षा तो सभी का धन है...2
ये शिक्षा ही जीवन है...2

हो हो ओ ओ हो हो ओ ओ...
हो हो ओ ओ हो हो ओ ओ...
हो ओ हो ओ हो ओ हो ओ...

रचना

शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

410

दिनांक - 03/03/2024 दिन - रविवार

गीत- हौसला ना हारें हम जीत जाएगें

तर्ज़- लोकगीत

चलते चलें, बढ़ते चलें,
हर मंजिल पाएगें।
हौसला ना हारें,
हम जीत जाएगें।।

सुनें हवा का संदेशा,
क्या कह रही हमसे?
लहरें जो सागर की,
मिलतीं तट से कैसे?
लक्ष्य को अपने पहचानें,
अच्छा कर जाएगें।
हौसला ना.....

नभ में उड़ते पक्षी,
क्या कह जाते हमसे?
धरा जिसपे हम रहते।
कहती है क्या? कब से?
चाह, कर्म के योग से,
उन्नत बन जाएगें।
हौसला ना.....

सुख-दुःख का आना जाना क्या?
मानव तन बड़ भाग्य का।
सृष्टि अनोखी, अद्भुत प्यारी,
रचना कर सौभाग्य का।।
चिन्ता, भय को त्याग दें,
हर पल मुस्काएगें।
हौसला ना.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

411

दिनांक - 10/03/2024

दिन - रविवार

तर्ज़ - बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम

गीत - ये दिल जान तुझपे फ़िदा है वतन

ये दिल जान तुझपे फ़िदा है वतन,
हमारे लिए तो खुदा है वतन।
ये दिल जान.....

बसा देश सबके दिलों में यहाँ,
ये सौंधी सी खुशबू मिलेगी कहाँ?
माटी ना छूने देंगें दुश्मन को हम।।
ये दिल जान.....

रहें देशभक्ति की लौ हम जलाते,
सदा सच की राहों पे रहें पग बढ़ाते।
खिलता रहें अपना प्यारा चमन।।
ये दिल जान.....

रहे आसमां में तिरंगा लहरता,
सरहद पे सैनिक हौसलों से चहकता।
भारत के गीत गाए ज़मीं और गगन।।
ये दिल जान.....

रचना - पूनम नैन (स०अ०)
कंपोजिट विद्यालय मुकंदपुर
छपरौली, बागपत

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

दिनांक - 17/03/2024

दिन - रविवार

412

राम आ गये!

तर्ज- यह है मथुरा नगरिया

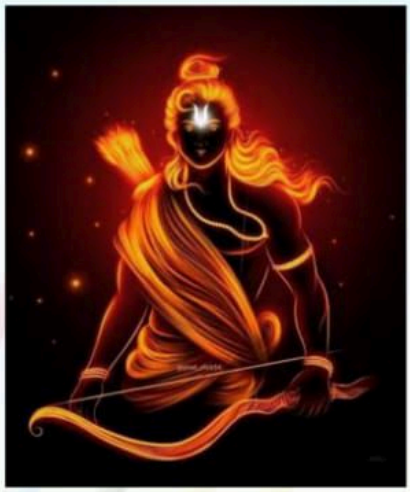

राम आ गये। राम आ गये।।
आज सारे हिंदुस्तान में राम आ गये।
धरती और आसमान में राम आ गये।।

चाहे युवक, वृद्ध या बच्चा
हर तोतली जवान पर राम आ गये।।
डूबा हर कोई भक्ति भँवर में,
धरती के हर इंसान में राम आ गये।।

अग्नि देव का यज्ञ किया जब,
दशरथ जी की सन्तान में राम आ गये।।
आज हुई जब प्राण प्रतिष्ठा,
एक मूर्ति की प्राण में राम आ गये।।

किस कोने में राम न पहुँचे,
श्रीलंका से जापान तक राम आ गये।।
राम बँधे न धर्म के बन्धन,
हिन्दू और मुसलमान में राम आ गये।।

कितने वर्षों तक की प्रतीक्षा,
आज शबरी के मेहमान में राम आ गये।।
शब्दों में कोई बात ना पाये,
हर ज्ञान और विज्ञान में राम आ गये।।

हर स्तुति में राम बसे हैं,
आरती और अजान में राम आ गये।
राजा हो या ही भिखारी,
हर किसी के मकान में राम आ गये।।

रचना-
श्रीमती पूनम गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर, धनीपुर
जनपद- अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

दिनांक - 24/03/2024

413

दिन - रविवार

गीत- गेहुँआ लहराय सोने के जइसन बा बाली

तर्ज़- लोकगीत

सतरंगी रंग ओढ़ चुनरिया,
प्रकृति भइल मतवाली।
सेमल, टेसू के फुलवन संग,
अनुपम छटा निराली।।

गेहुँआ लहराय, सोने के जइसन बा बाली।
अरहर मुसकाय, लद गई फलियन से डाली।।
आयल हो फागुन महिनवां हो,
धरे धीर न जाय, मन में मची खुशहाली।
गेहुँआ लहराय.........................
अरहर मुसकाय........................

सरसों, चना पक गइलें हो,
मसुरी हरषाय, मटर क देखा हो रूपवा।
पपिहा दे टेर, प्यारी लगे हो धूपवा।।
भावै ई फागुन महिनवाँ हो,
सबही खुशहाल, बजावै ढोल और ताली।
गेहुँआ लहराय.......................
अरहर मुसकाय......................

मनवाँ में रंग समायल हो,
हरा-पीला औ लाल सबका भई मोहनी सुरतिया।
देखि फागुन के ढंग भूले न भूली ई बतिया।।
सरसावे ई फागुन महिनवाँ हो,
उड़े नभ में गुलाल, देखत बनऽ ई लाली।
गेहुँआ लहराय......................
अरहर मुसकाय.....................

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन

दिनांक - 31/03/2024

दिन - रविवार

414

तर्ज- स्वर्ग से सुन्दर सपनों से प्यारा....

गीत - सपने मन में नये-नये हैं...

सपने मन में नये-नये हैं, हों कैसे साकार।
कठिन परिश्रम करना होगा, तब हो बेड़ा पार।।
हमारा जीवन सुधरे, समझना होगा गहरे।।-2

रे मन मत घबरा तू, तेरे सपने सुखद सलोने।
पूरे करना इनको, छूना जग के हर कोने।।
कितना सुन्दर, शुभ दिन ये जब, ले लेंगे आकार।
हमारा जीवन सुधरे, समझना होगा गहरे।।-2

मानो पिता-माता को, नित दो इनको सम्मान तू।
बड़ों की शिक्षा मानो, हों पूरे सब अरमान, तू।।
रख धीरज बढ़ता जा पथ पर, झंझट सब बेकार।
हमारा जीवन सुधरे, समझना होगा गहरे।।-2

वेद-पुराण बताते, जितने भी ग्रन्थ हमारे।
नैतिक गुण हों उर में, हों पथ आसान हमारे।।
उपकारी बन बढ़ते जायें, सब करते उपकार।।
हमारा जीवन सुधरे, समझना होगा गहरे।।-2

रचना- जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)